IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''पारिवारिक सहय ोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

सरोज कुमारी

पीएच.डी. स्कोलर, शिक्षा संकाय जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

डॉ. नीलम तिवारी

सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ''पारिवारिक सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर आधारित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि पारिवारिक सहयोग दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करता है। अध्ययन में पारिवारिक सहयोग के प्रमुख आयामों, जैसे–अभिभावकीय प्रोत्साहन, अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण, भावनात्मक सहयोग, मार्गदर्शन तथा शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता के संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण किया गया। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण शोध विधि एवं न्यादर्श में 200 विद्यार्थियों हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया तथा संकलित दत्तों का उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि पारिवारिक सहयोग एवं दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है। जिन विद्यार्थियों को परिवार से अधिक सहयोग, प्रोत्साहन एवं अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई। अतः यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार के लिए परिवार की सक्रिय सहभागिता, सकारात्मक अभिभावकीय दृष्टिकोण तथा निरंतर शैक्षिक सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द : पारिवारिक सहयोग, दिव्यांग किशोर विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय सहयोग, अध्ययन वातावरण।

प्रस्तावना :

परिवार बालक की प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण शिक्षण संस्था है, जहाँ उसके व्यक्तित्व, व्यवहार, मूल्यों एवं सीखने की प्रवृत्तियों का प्रारम्भिक विकास होता है। विशेष रूप से दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों के लिए परिवार का सहयोग उनकी शैक्षिक प्रगति, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक समायोजन का महत्वपूर्ण आधार होता है। परिवार द्वारा प्रदान किया गया स्नेह, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, भावनात्मक समर्थन तथा अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों के समक्ष शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर पर अनेक चुनौतियाँ होती हैं। ऐसी परिस्थितियों में यदि परिवार सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए उनकी आवश्यकताओं को समझे, नियमित अध्ययन में सहयोग करे तथा विद्यालय के साथ समन्वय बनाए रखे, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है। इसके विपरीत, पारिवारिक उपेक्षा, जागरूकता का अभाव अथवा अध्ययन के प्रति असहयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकता है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध–पत्र ''पारिवारिक सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर आधारित है। इस अध्ययन का उद्देश्य पारिवारिक सहयोग एवं दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना तथा यह स्पष्ट करना है कि अभिभावकों की सहभागिता, प्रोत्साहन एवं सहयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में किस प्रकार योगदान देते हैं। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अभिभावकों, अध्यापकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शिक्षा–नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करेंगे तथा दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु प्रभावी उपायों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होंगे।

औचित्य

दिव्यांग किशार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें पारिवारिक सहयोग का विशेष स्थान है। परिवार ही वह प्रथम सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण प्रदान करता है, जहाँ विद्यार्थी अध्ययन के प्रति अभिरुचि, आत्मविश्वास, अनुशासन तथा सीखने की प्रेरणा प्राप्त करता है। अभिभावकों का प्रोत्साहन, भावनात्मक सहयोग, नियमित मार्गदर्शन तथा अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देता ह।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि पर अनेक अनुसंधान किए गए हैं, किन्तु पारिवारिक सहयोग के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विशेष रूप से दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों के संदर्भ में अपेक्षाकृत कम अध्ययन उपलब्ध है। यही शोध–अंतर प्रस्तुत अध्ययन को आवश्यकता एवं औचित्य को स्पष्ट करता है।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अभिभावकों को दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने, अध्ययन में उनकी सक्रिय सहभागिता बढ़ाने तथा घर पर सकारात्मक शिक्षण वातावरण विकसित करने में सहायक होंगे। साथ ही, यह अध्ययन अध्यापकों, विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षा–नीति निर्माताओं को परिवार एवं विद्यालय के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित करने के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करेगा। इस

प्रकार प्रस्तुत अध्ययन दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार तथा उनके समग्र शैक्षिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण एवं औचित्यपूर्ण प्रयास है।

समस्या अभिकथन :–

''पारिवारिक सहयोग का दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

उद्देश्य :–

1. उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त पारिवारिक सहयोग का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त पारिवारिक सहयोग के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

विशिष्ट शब्दों की व्याख्या

1. पारिवारिक सहयोग – परिवार के सदस्यों द्वारा विद्यार्थी के शैक्षिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास के लिए प्रदान किए जाने वाले मार्गदर्शन, प्रोत्साहन, स्नेह, प्रेरणा तथा अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण से है।
2. दिव्यांगता – विकलांग के स्थान पर दिव्यांग शब्द का प्रयोग उन लोगो को सम्मान देने के लिए किया गया है जिनके किसी या कुछ अंगों में विकार है ये जन्मजात या किसी दुर्घटना के फलस्वरूप हो सकता है।
3. शैक्षिक उपलब्धि – जैसा की नाम से स्पष्ट होता है शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है इसके अन्तर्गत एक बालक एक समयावधि में जो अध्ययन करता है उसके परिक्षण के बाद प्राप्त परिणाम ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि बताता है।

परिसीमन

1 प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग के सीकर, झुन्झुनू, चूरू जिलों के शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

शोध विधि

शोधकर्त्री ने शोध अध्ययन कार्य में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श

शोध में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक विधि वह विधि है जो बहुत बडे समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। सभी विद्यार्थी राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग का प्रतिनिधित्व करत हैं। अतः न्यादर्श का चयन सीकर, झुन्झुनू, चूरू जिलों के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से किया गया। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सीकर, झुन्झुनू, चूरू जिलों में न्यादर्श के यादृच्छिक विधि के अनुसार 200 दिव्यांग विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिनमें से ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थी एवं शहरी क्षेत्र के 100 विद्यार्थी विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

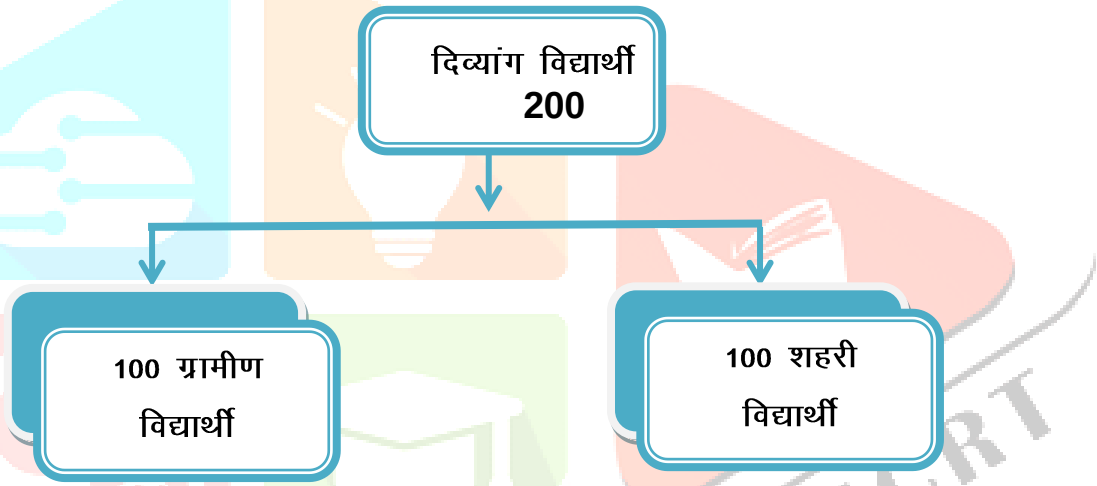

शोध उपकरण

शोधकार्य में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरण का प्रयाग किया गया है।

क्र.स.	उपकरण का नाम	स्थिति
1	पारिवारिक सहयोग मापनी	स्वनिर्मित

सांख्यिकी

शोधकर्त्री द्वारा दत्तों के संकलन हेतु संभावित रूप से प्रमिशत, मध्यमान, मानक विचलन, टी परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना – 1 उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त पारिवारिक सहयोग के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

तालिका संख्या 1.2

विधार्थी	N	M	SD	SED	D	Df	T-Test
ग्रामीण	100	133.01	15.06	2.05	16.91	198	8.25
शहरी	100	149.92	14.08				

** 0.05 सार्थक स्तर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त पारिवारिक सहयोग ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 133.01 तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 149.92 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियां का प्रमाप विचलन 15.06 तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का प्रमाप विचलन 14.08 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं प्रमाप विचलनों के आधार पर गणना की गई है जिसमें टी–मान 8.25 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता का मान 1.97 गणना द्वारा प्राप्त टी–मान सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः उक्त परिणाम के आधार पर परिकल्पना–1 ''उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त पारिवारिक सहयोग में सार्थक अन्तर है।'' अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

आरेख संख्या–1

उच्च प्राथमिक स्तर के दिव्यांग किशोर विद्यार्थियों को प्राप्त पारिवारिक सहयोग के प्राप्तांकों का आरेख प्रदर्शन

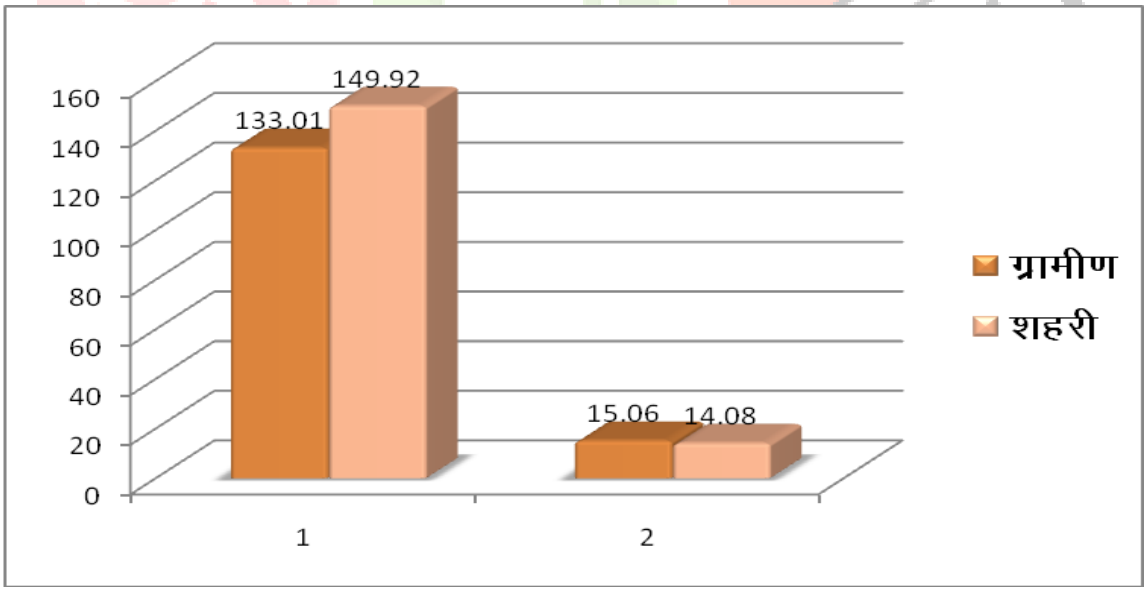

संदर्भ सूची

- Ainscow, M. (2005). Developing inclusive education systems: What are the levers for change? Journal of Educational Change, 6(2), 109–124.
- Balli, D. (2016). Parental involvement in meeting the special needs of children with disabilities in regular schools.
- Bajwa, S., & Kaur, H. (2015). Relationship of family support and mental health with academic achievement at the senior secondary level.
- Ellis, M., et al. (2014). Parental influence on participation in physical activity and physical health among deaf children.
- Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016. Ministry of Law and Justice.
- Kristjánsson, K., et al. (2011). Development of a parental support scale for survey research in Europe.
- Kumar, S. (2015). Career maturity in relation to family support and academic achievement among senior secondary students.
- Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- Movallali, G., et al. (2015). Attachment style and perceived parenting style among hearing-impaired and typically developing adolescents.
- Mutisya. (2015). The role of parents in the learning process of children with hearing impairment in Kenya.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). Including children and youth with disabilities in education: A guide for practitioners.
- Perkins, A., et al. (2013). Parents' perceptions of physical activity among children with visual impairment.
- UNESCO. (2020). Global Education Monitoring Report 2020: Inclusion and Education – All Means All.
- Wondimu, A., et al. (2021). The role of parents in the education of children with disabilities in primary schools of Ethiopia.